

----- Click on the -----
Download Link
To view the complete book

व्याकरणवीथि:

कक्षा 9 एवं 10 के लिए संस्कृत व्याकरण



0974

विद्यया ऽ मृतमश्नुते



एन सी ई आर टी
NCERT

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

974 – व्याकरणवीथि:

कक्षा 9 एवं 10 के लिए संस्कृत व्याकरण

ISBN 978-93-5007-774-0

प्रथम संस्करण

जुलाई 2003 आषाढ शकसंवत् 1925

संशोधित संस्करण

नवंबर 2016 कार्तिक शकसंवत् 1938

पुनर्मुद्रण

अप्रैल 2019 चैत्र शकसंवत् 1941

सितंबर 2019 भाद्रपद शकसंवत् 1941

जनवरी 2021 पौष शकसंवत् 1942

PD 10T RPS

© राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण
परिषद्, 2016

₹ 105.00

एन.सी.ई.आर.टी. वाटरमार्क 80 जी.एस.एम. पेपर
पर मुद्रिता

प्रकाशन प्रभाग में सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक
अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविंद
मार्ग, नयी दिल्ली 110 016 द्वारा प्रकाशित तथा
बेरी आर्ट प्रैस, ए-9, मायापुरी इंडस्ट्रियल एरिया
फेज़-1, नयी दिल्ली - 110 064 द्वारा मुद्रिता

- प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को छापना तथा इलेक्ट्रॉनिकी, मशीनी, फोटोप्रतिलिपि, रिकॉर्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुनः प्रयोग पद्धति द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रसारण वर्जित है।
- इस पुस्तक की बिक्री इस शर्त के साथ की गई है कि प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना यह पुस्तक अपने मूल आवरण अथवा जिल्द के अलावा किसी अन्य प्रकार से व्यापार द्वारा उधारी पर, पुनर्विक्रय या किराए पर न दी जाएगी, न बेची जाएगी।
- इस प्रकाशन का सही मूल्य इस पृष्ठ पर मुद्रित है। रबड़ की मुहर अथवा चिपकाई गई पर्ची (स्टीकर) या किसी अन्य विधि द्वारा अंकित कोई भी संशोधित मूल्य गलत है तथा मान्य नहीं होगा।

एन.सी.ई.आर.टी. के प्रकाशन प्रभाग के कार्यालय

एन.सी.ई.आर.टी. कैम्पस

श्री अरविंद मार्ग

नयी दिल्ली 110 016

फोन : 011-26562708

108, 100 फीट रोड

हेली एक्सटेशन, होस्टेकेरे

बनाशंकरा III इस्टेट

बेंगलुरु 560 085

फोन : 080-26725740

नवजीवन ट्रस्ट भवन

डाकघर नवजीवन

अहमदाबाद 380 014

फोन : 079-27541446

सी.डब्ल्यू.सी.कैम्पस

निकट: धनकल बस स्टॉप पनिहटी

कोलकाता 700 114

फोन : 033-25530454

एन.सी.ई.आर.टी. कैम्पस

श्री अरविंद मार्ग

नयी दिल्ली 110 016

फोन : 011-26562708

प्रकाशन सहयोग

- अध्यक्ष, प्रकाशन प्रभाग : अनूप कुमार राजपूत
मुख्य संपादक : श्वेता उष्यल
मुख्य उत्पादन अधिकारी : अरुण चितकारा
मुख्य व्यापार प्रबंधक (प्रभारी) : विपिन दिवान
संपादक : रेखा अग्रवाल
सहायक उत्पादन अधिकारी : मुकेश गौड़

आवरण

अमित श्रीवास्तव

पुरोवाक्

भारतस्य शिक्षाव्यवस्थायां संस्कृतस्य महत्त्वमुद्दिश्य विद्यालयेषु संस्कृत - शिक्षणार्थमादर्श - पाठ्यक्रम - पाठ्यपुस्तकादिसामग्रीविकासक्रमे राष्ट्रियशैक्षिकानुसन्धानप्रशिक्षणपरिषदः भाषाशिक्षाविभागेन षष्ठवर्गादारभ्य द्वादशकक्षापर्यन्तं राष्ट्रियपाठ्यचर्यानुरूपं संस्कृतस्य आदर्शपाठ्यक्रमं निर्माय पाठ्यपुस्तकानि निर्मायन्ते। अस्मिन्नेव क्रमे माध्यमिकस्तरीयच्छात्राणां संस्कृतव्याकरणसम्बन्धिकाठिन्यमपाकर्तुं द्वादशाध्यायेषु प्राक्तनसामाजिक-विज्ञानमानविकीशिक्षाविभागेन निर्मितस्य व्याकरणवीथिः नामपुस्तकस्य संशोधितं परिवर्धितं च संस्करणं प्रस्तूयते। अत्र वर्णविचारसंज्ञासन्धिशब्द-धातुरूपोपसर्गाव्ययप्रत्ययसमासरचनाप्रयोगानां परिचयप्रदानेन सह छात्रेषु संस्कृतभाषाकौशलानां विकासोऽप्यस्माकं लक्ष्यम्। पुस्तकमिदं पठित्वा छात्राः संस्कृतस्य प्रयोगे दक्षाः भवेयुः, इति एतदर्थमपि पुस्तकेऽस्मिन् प्रयत्नो विहितः।

पुस्तकस्यास्य प्रणयने आयोजितासु कार्यगोष्ठीषु आगत्य यैः विशेषज्ञैः अनुभविभिः संस्कृताध्यापकैश्च परामर्शादिकं दत्त्वा सहयोगः कृतः, तान् प्रति परिषदियं स्वकृतज्ञतां प्रकटयति। पुस्तकमिदं छात्राणां कृते उपयुक्ततरं विधातुं अनुभवानां विदुषां संस्कृत-शिक्षकाणां च सत्परामर्शाः सदैवास्माकं स्वागतार्हाः।

नवदेहली
नवम्बर 2016

हृषिकेश सेनापति
निदेशकः
राष्ट्रियशैक्षिकानुसन्धानप्रशिक्षणपरिषद्

© NCERT
not to be republished

भूमिका

व्याकरणशास्त्र अनादिकाल से भारतीय चिन्तन का अनिवार्य अङ्ग रहा है। प्रातिशाख्य तथा ब्राह्मण ग्रन्थों में पदगत सन्धि, समास, आगम, लोप, वर्ण-विकार, प्रकृति तथा प्रत्ययों का विवेचन प्राप्त होता है। निरुक्तकार यास्क का योगदान इस दृष्टि से अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। इनके द्वारा की गई नाम, आख्यात, उपसर्ग, निपात तथा क्रिया आदि की व्याख्या व्याकरण के परवर्ती आचार्यों (पाणिनि, कात्यायन तथा पतञ्जलि) के लिए भी उपयोगी रही है।

वैदिक काल से लेकर आधुनिक काल तक संस्कृत भाषा में लिखित शास्त्रों के सम्यक् अध्ययन, मनन एवं चिन्तन के लिए व्याकरण का ज्ञान आवश्यक है, क्योंकि व्याकरण भाषा को शुद्ध बनाकर उसका समुचित प्रयोग सिखाता है। व्याकरण शब्द (वि + आ + कृ + ल्युट्) से निष्पन्न है। **व्याक्रियन्ते व्युत्पाद्यन्ते शब्दाः अनेन** इति व्याकरणम् अर्थात् शब्दों की व्युत्पत्ति करने वाले, प्रकृति एवं प्रत्यय का निर्धारण करने वाले तथा उनके शुद्ध स्वरूप का विवेचन करने वाले शास्त्र को व्याकरणशास्त्र कहते हैं। अति प्राचीन काल से शास्त्रों में व्याकरण का प्रमुख स्थान है — **मुखं व्याकरणं स्मृतम्**। संस्कृत भाषा में व्याकरणशास्त्र का जितना सूक्ष्म तर्कपूर्ण एवं विस्तृत विवेचन हुआ है उतना विश्व की किसी अन्य भाषा में नहीं हुआ है। वेदों के सम्यक् अध्ययन, अर्थ बोध तथा वेद मंत्रों की व्याख्या के लिए वेदाङ्गों का ज्ञान अनिवार्य है। वेदाङ्ग छह हैं —

शिक्षा व्याकरणं छन्दो, निरुक्तं ज्योतिषं तथा।

कल्पश्चेति षडङ्गानि, वेदस्याहुर्मनीषिणः॥

1. शिक्षा, 2. व्याकरण, 3. छन्द, 4. निरुक्त, 5. ज्योतिष, और 6. कल्पा